समावेशी शिक्षा का सिद्धान्त-

समावेशी शिक्षा के निम्नलिखित सिद्धान्त हैं-

1- बालकों में एक सी अधिगम की प्रवृत्ति।
2- बालकों को समान शिक्षा का अधिकार।
3- सभी राज्यों का दायित्व है कि वह सभी वर्गों के लिए यथोचित संसाधन सामग्री धन तथा सभी संसाधन उठाकर स्कूलों के माध्यम से उनकी गुणवत्ता में सुधार करके आगे बढ़ाए।
4- शिक्षण में सभी वर्गों, शिक्षकों, परिवार तथा समाज का दायित्व है कि समावेशी शिक्षा में अपेक्षित सहयोग करें।

समावेशी शिक्षा के उद्देश्य-

समावेशी शिक्षा के निम्नलिखित उद्देश्य हैं-

1- बालक के विकास के लिए सहायक वातावरण उपलब्ध कराना।
2- बालक में समाज के प्रति सकारात्मक दृष्टिकोण लाना।
3- समाज का बालकों के प्रति संवेदनशीलता का विकास।
4- सीखने की प्रवृत्ति का विकास।

Scanned with CamScanner

5- बालकों में नवजीवन का संचार।

6- बालकों को स्वावलम्बी होने के लिए व्यावसायिक शिक्षा प्रदान करना।

समावेशी कक्षाओं की सामान्य प्रथाएँ-

साधारणतः छात्र एक कक्षा में अपनी आयु के हिसाब से रखे जाते हैं, चाहे उनका अकादमिक स्तर ऊँचा या नीचा ही क्यों न हो। शिक्षक सामान्य और दिव्यांग सभी बच्चों से एक जैसा बर्ताव करते हैं। अशक्त बच्चों की मित्रता अक्सर सामान्य बच्चों के साथ करवायी जाती है क्योंकि ऐसे ही समूह समुदाय बनता है। यह दिखाया जाता है कि एक समूह दूसरे समूह से श्रेष्ठ नहीं है। ऐसे बर्ताव से सहयोग की भावना बढ़ती है।

शिक्षक कक्षा में सहयोग की भावना बढ़ाने के लिए निम्नलिखित तरीकों का उपयोग करते हैं—

1- समुदाय भावना को बढ़ाने के लिए खेलों का आयोजन।

2- विद्यार्थियों को समस्या के समाधान

Scanned with CamScanner

में शामिल करना।

3- किताबों और गीतों का आदान-प्रदान।

4- सम्बन्धित विचारों का कक्षा में आदान-प्रदान।

5- छात्रों में समुदाय की भावना बढ़ाने के लिए कार्यक्रम तैयार करना।

6- छात्रों को शिक्षक की भूमिका निभाने का अवसर प्रदान करना।

7- विभिन्न क्रिया कलापों के लिए छात्रों का दल बनाना।

8- शान्ति-प्रिय वातावरण का निर्माण करना।

9- बच्चों के लिए लक्ष्य निर्धारण करना।

10- अभिभावकों का सहयोग लेना।

11- विशेष प्रशिक्षित शिक्षकों की सेवा लेना।

Scanned with CamScanner